Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

Original Article

बौद्ध धर्म में नारी – विमर्श

डॉ० पंकज कुमार
सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास)
ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय,दरभंगा
Email- pankajdbga@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180414
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 4(A)
Pp 61-63
April- 2026
Submitted: 23 Mar. 2026
Revised: 30 Mar. 2026
Accepted: 14 Apr. 2026
Published: 30 April. 2026

सारांश :–
बौद्ध धर्म के विकास के साथ नारीयों के योगदान के महात्मा बुद्ध के जीवन काल में भारतवर्ष के बौद्ध मतानुयायी नारी का उल्लेख किया गया है। भारतीय नारी के साथ – साथ बिहार के नारीयों का सहयोग किया था। बौद्ध काल के समय भारतीय समाज की नारी की स्थिति कैसी थी यह तो कहना मुसकिल है लेकिन बौद्ध धर्म में विकास में जितनी भी सहायता किया या पहुँच बनाएई वह कम नही था वह सबसे अधिक माना जाता है। नारी – विमर्श बौद्ध धर्म के विकास में ग्रन्थों और उपनिषदों से कुछ विदुषी नारीयों की विकास की कहानियों की चर्चा मिलता है जिसमें बौद्ध धर्म के नारी – विमर्श में नारीयों का योगदान जिसमें सर्वसाधारण नारी समाज के सामाजिक जीवन को उज्जवल स्थिति के साथ भगवान बुद्ध ने नारी सामाजिक जीवन सुख से व्यतीत करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया कि मेरे नारीयों समाज की जीवन हर हमेशा उज्जवल होना चाहिए यही बुद्ध कामना था। वैदिक युग के बाद से नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को कभी स्वीकार नही किया गया। ऐसी परिस्थितियाँ ओर विद्यान बनते चले गए कि पिता पति और पुत्र के अधीन रहने का बाध्य रही। नारी के लिए पति की स्थान ईश्वर से ऊँचा माना गया, पति को परमेश्वर के रूप में प्रतिष्ठित किया गया जिसकी चरण दासी बन आजीवन सेवा करना ही नारी की परम धर्म माना गया।

मुख्य शब्द :– *बौद्ध धमों नारी विमर्श, सामाजिक विकास, आर्थिक विकास, शोषण, अत्याचार, अस्मिता, संघर्ष, योगदान आदि*

भूमिका : –

धर्म मानव को अपने प्रत्येक रूप से समेट लेता है धर्म एक ऐसा शब्द है, जिसके समस्त रहस्यों का उद्घाटन करने की क्षमता मानव के पास है भी या नहीं यह भी विवाद का विषय हो सकता है। सर्वाधिक रहस्यवान् होने के उपरांत भी मानव जिसके प्रति सर्वाधिक श्रद्धावनत और समर्पित है उसे धर्म मानकर ही संबोधित करता है। धर्म के प्रति यह समर्पण अनेक बार अंधविश्वास और अंधश्रद्धा तक पहुँच जाता है और जिसे वह धर्म मानता है उसकी रक्षा के लिए वह अपने प्राणों का ही नहीं बल्कि अपना अस्तित्व तक का बलिदान करने के लिए तैयार हो जाता है। इस शब्द का आश्रय लेकर मानव ने एक ओर जहाँ सर्वाधिक सृजनात्मक कार्य किए है, अपना उत्कर्ष किया है, मानवता के श्रेष्ठम् मूल्यों को उद्घाटित किया है, वह दूसरी ओर इस शब्द का आड़ लेकर उसने सर्वाधिक रक्त भी बहाया है। धर्म के नाम पर सर्वाधिक युद्ध हुए. सर्वाधिक हत्याएँ हुई, सर्वाधिक शोषण हुआ और सर्वाधिक उत्पीड़न भी। धर्म की आड़ लेकर जैसी निरंकुशता और बर्बरता के क्षेत्र में मानव उतरा है. वैसी निरंकुशता और बर्बरता मानव ने अपने स्वयं के प्राणों की रक्षा के लिए भी नहीं की। मानव का समस्त पाखण्ड, समस्त अंधविश्वास धर्म से ही जुड़ा हुआ है तथा मानव का अपनी श्रेष्ठतम् उपलब्धियों भी अंततः धर्म से ही प्राप्त हुई हैं। यही कारण है कि अभी तक धर्म को लेकर जो विरोधाभास है उसे जानने और समझने की आवश्यकता है। धर्म एक एसी अनुभूति है जिसे स्वयं प्राप्त करना होता है।

हिन्दु धर्म नारी की स्थिति : – हमारे देश में जिस शब्द का अर्थ सतीत्व होता है, वह केवल नारियों के लिए ही है। हमारे शास्त्रकार वनों व जंगलों में निवास करते थे लेकिन फिर भी वे समाज को पहचानते थे इसलिए व लोग यह शब्द बनाकर अपने जाति – भाईयों अर्थात पुरूषों को असुविधा में नहीं डाले। जो हो निश्चित यह हुआ था कि नारी के लिए तो सतीत्व है परन्तु पुरूष के लिए नहीं। और सतीत्व का चरम रूप हो गया सहमरण। हिन्दू समाज की गौरवशाली महान संस्कृति का यदि ईमानदारी से विश्लेषण किया जाए तो उजागर होगा कि जहाँ तक शूद्रों, दासों और स्त्री जाति के प्रति आचार – व्यवहार का संबंध है उनके लिए हिन्दू संस्कृति में गौरव करने लायक कोई बात नहीं है। जिस युग को हिन्दू जाति का स्वर्णिम युग बताया जाता है हम पाते है कि स्वर्णिम कहे जाने वाले इस काल में शूद्र दास और नारी अधम एवं हीन स्थिति में रहने को बाध्य थे। वैदिक युग के बाद से नारी एक वस्तु में बदल दी जाति थी। वह पुरूष की भोग्या एवं वंश बढ़ाने का साधन मात्र रह जाती थी। वैदिक युग के बाद से नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को कभी स्वीकार नहीं किया गया। ऐसी परिस्थितियों और विधान बनते चले गए कि वह पिता पति और पुत्र के अधीन रहने को बाध्य रहे। स्त्री के लिए पति का स्थान ईश्वर से ऊँचा है पति को परमेश्वर के रूप में प्रतिष्ठित किया गया जिसकी चरणदासी बन आजीवन सेवा करना ही स्त्री का परम धर्म माना गया। नारी की तुलना कुत्ते, शुद्र और चांडाल से की गई।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ० पंकज कुमार सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय,दरभंगा

How to cite this article:
कुमार, पंकज. (2026). बौद्ध धर्म में नारी - विमर्श. Journal of research & development, 18(4(A)), 61–63. https://doi.org/10.5281/zenodo.20378348

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.20378348
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

शतपथ ब्रह्मण में कहा गया है कि यज्ञ के समय कुत्ता, शुद्र और नारी की ओर नहीं देखना चाहिए। मैत्रयणी संहिता और तैत्तरीय संहिता में स्पष्ट कहा लिखा है कि नारी अशुभ है।

हिन्दू समाज में नारी की इस अधिकार शून्य दयनीय अवस्था के लिए मुख्यतः धर्म उत्तरदायी है। वैदिक युग के बाद रचे गये धार्मिक ग्रंथों, संहिताओं स्मृतियों, ब्राम्हणों, पुराणों एवं सूत्रों से स्त्री जाति के कर्तव्यों और धर्म पर विशद रूप से प्राकश डालते हुए उपर्युक्त बातों को धर्मोचित एवं न्योयाचित बताया गया है। सती प्रथा जैसी जघन्य अमानुषिक प्रथा दुनियां के किसी भी धर्म में नहीं है केवल हिन्दु धर्म में है। यहाँ एक बात यह भी स्पष्ट होती है कि पुत्र के जन्म को मोक्ष और स्वर्ग प्राप्ति से जोड़ प्राचीन समाज में पुत्री की अपेक्षा पुत्र के महत्व को स्थापित किया जा चुका था।

1. **ईसाई धर्म में नारी की स्थिति :–** अक्सर कहा जाता है कि ईसाई धर्म ने स्त्रियों की दशा को सुधारा है। जिस समाज से इस बात पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाता है कि कठोर नैतिक संहिताओं का उल्लंघन न किया जाए और इनका सख्ती से पालन किया जाए इस समाज में स्त्री कभी भी उदार एवं स्वतंत्र स्थिति का उपभोग कभी नहीं कर सकती। महाधीशों ने सदैव स्त्री को मुख्यतः बहकाने वाली मोहिनी के रूप में चित्रित किया है। उन्होंने हमेशा यह सोचा है कि वह अपवित्र कामुकता को उत्तेजित कर पाप के रास्ते की ओर ले जाने वाली है। आरंभ से चर्च की यह शिक्षा रही है और आज भी है कि स्त्री का कौमार्यावस्था सर्वश्रेष्ठ है। लेकिन जिनके लिए कौमार्य को पालना असंभव है उन्हें चर्च से विवाह की इजाजत दी है। अर्थात् कामाग्नि में जलते रहने की अपेक्षा विवाह कर लेना बेहतर है। औरतों के त्याग, बलिदान से सीचें ईसाई धर्म में औरत को समाज अधिकार तो दूर उसे पुरूषों की तुलना में हीन बताया गया है। जो बाईबिल से नारी के अस्तित्व को दर्शाया है कि और परमपिता परमेंश्वर ने आदम को गहरी नींद में सुलाया और इसकी पसलियों में से एक पसली निकालकर उससे उसने नारी को बनाया और आदम के पास लाए। 11 नवम्बर 1992 को केन्टबरी गिरजाघर जिसे इंग्लैण्ड के गिरजाघरों की माता कहा जाता है के वेस्ट मिनिस्टरों में एंगलिकन धर्मालंबियों की संसद ने दो तिहाई बहुमत से यह प्रस्ताव पास किया है कि महिलाएँ पादरी पद पर प्रतिष्ठत हो सकती है। परिवर्तनवादियों का नेतृत्व करने वाले केन्टबरी चर्च के आर्य बिशप का तर्क था कि परमात्मा न मर्द है न औरत। वह दोनो को अंगीकार करता है। महिलाओं के चर्च में पद में प्राप्ति से पुरूष का आधिपत्य एवं धर्म में व्याप्त असमानता समाप्त होगी। पर रूढ़िवादियों का कहना है कि ईसा मसीह पुरूष थे इसलिए इनके धर्म का प्रतिनिधित्व करने वाले पोप, पादरी, विशप आदि पुरूष होने चाहिए। रोमन कैथोलिक चर्च ने एंगलिकन चर्च के इस प्रस्ताव पर चिंता जाहिर करते हुए उसका विरोध किया। मानव को जन्म देने में स्त्री की भूमिका अधिक है। ईश्वर ने दोनों के एक – दूसरे के लिए रचा है। नारी अस्मिता एवं स्वतंत्रया की पक्षधर बेट्टी फ्रेडियर ने सन् 1969 में नेशनल कॉफ्रेस के अपने आभिभाषण में धर्माचर्यों द्वारा मात्र संतानोत्पत्ति के लिए संभोग की व्यवस्था का कड़ा विरोध करते हुए कहा कि माँ बनने का निर्णय स्त्रियों के मौलिक प्रतिष्ठा से जुड़ा है। यह निर्णय उसके विवेक, उसकी अंतरात्मा एवं मानवीय मौलिक अधिकार एवं प्रतिष्ठा से जुड़ा है। स्त्रीत्व माँ बनने तक सीमित न रह संपूर्ण मानवीय प्रतिभाओं के विकसित करने के अवसरों से जुड़ा होना चाहिए। जिस तरह पुरूष के पिता बनने के साथ जीवन के बाकी दरवाजे बन्द नहीं होते, उसी तरह स्त्री के भी माँ बनने के साथ बाकी दरवाजे बंद नहीं होने चाहिए। ईसाई मिश्नरीयों एवं उनके शिक्षा पद्धित ने स्त्रीयों व मानवता के प्रति शिक्षा एवं समाज सुधार में पर्याप्त एवं आश्चर्यजनक परिवर्तन लाए जिसके फलस्वरूप आज वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों के स्थिति में सामनता एवं सम्मानीय व उच्च स्थान प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिए है।

2. **ईस्लाम धर्म में नारी की स्थिति : –** औरतों के लिए विवाह का मतलब गुलामी है। बस्ती की एक औरत और कायदे – कानून तो तब एक से ही है। उसका खाविंद भी जब चाहे, तलाक – तलाक – तलाक कह सकता है और वह एक – एक कर चार बेगम लाने की शान – शौकत दिखा सकता है। पति का मतलब ही है प्रभु। पत्नी अर्धागिनी होकर भी पति का आधा भाग नहीं है। अर्धागिनी, महधार्मिणी शब्दों के पुल्लिगवाची शब्द भी कोष में है क्या? नारी और पुरूष के बीच समानता की कोई धर्म नहीं करता। इस्लाम भी नहीं। इस्लाम की ओर से यह दावा किया जाता है कि यह एकमात्र धर्म है जिसने स्त्री को समान दर्जा दिया। लेकिन कुरान और हदीस जो इस्लाम के धार्मिक ग्रंथ है को पढ़ने के बाद ही सही बात उजागर होती है कि इस्लाम ने किसी भी स्तर पर स्त्री को समान दर्जा नहीं दिया और एक वक्त ऐसा आया कि स्त्री को हरम में कैंद कर दिया गया। अतः इस पृष्ठभूमि में यह कहा जा सकता है कि तत्कालीन परिस्थितियों में स्त्रियों मिले तत्काल, सम्पति आदि के अधिकारों के कारण उनकी अवस्था में काफी हद तक बदलाव आया और उस वक्त वे ईसाई – यहुदी समाजों की स्त्रियों से अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में थी। पर यह कहना सरासर गलत है कि इस्लाम में स्त्रियों की पुरूष के बराबर दर्जा प्राप्त है। हालाँकि सुर : बकर 2 की एक आयत में औरतों का हल मर्दों पर वैसा ही बताया गया है, जैसा कि मर्दों का औरतों पर लेकिन इसी आयत की अंत में यह लिखा है कि मर्दों की औरतों पर फजीहत (श्रेष्ठता) है। इस तरह अन्य धर्मों की तरह ईस्लाम ने भी स्त्री को पुरूष के आधीन माना है। सुरः निता 4 की आयत 34 में कहा गया है कि – मर्द औरतों पर हाकिम और मुसल्लत (आच्छादित) है इसलिए खुदा ने कुछ को कुछ से अपबल (उत्तम) बनाया है औश्र इसलिए भी कि मर्द अपना माल खर्च करते है तो जो नेक बीवियाँ है, वे मर्दों के हुक्म पर चलती है और उनके पीठ पीछे खुदा की हिफाजत में माल व आवक की खबरदारी करती है। और जिन औरतों के बारे में तुम्हें मालूम हो कि सरकशी अवज्ञा करने लगी है तो पहले उनकों जुबानी समझाओं अगर न समझे तो फिर उनके साथ सोना छोड़ दो। अगर इस पर भी न माने तो मारों – पीटो और फरमावरदार (आज्ञाकारिणी) हो जाए तो उन्हें तकलीफ देने का बहाना मत ढूंढों। बेशक खुदा सबसे ऊँचा और जलीलुल कद्र (ऊँची इज्जतवाला) है। ईस्लाम इस धारणा को मानता है कि पहली स्त्री की रचना पुरूष के बांए पैर से हुई है। बाद में दोनो ने मिलकर मानव जाति की रचना की। अतः पुरूष के पैर से स्त्री की रचना हाने के कारण वह पुरूष से हीन मानी गई।

4. **सिक्ख धर्म में नारी की स्थिति :–** सिक्ख धर्म में नारियों को पुरूषों के बराबर सम्मान तथा स्थान हासिल है। 15वीं शताब्दी में गुरू नानक से लेकर 18वीं शताब्दी में गुरू गोविंद सिंह तक सभी दस सिक्ख गुरूओं ने महिलाओं को सामाजिक तथा धार्मिक आजादी दिलाने और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा तथ सम्मान की जमकर पैरवी की। गुरू नानक ने तो यह कहकर "भंडी जँमीअै भंडी निमीअै भंडी मंगण बिआहू" कि स्त्री के बिना पुरूष के जीवन को अधूरा बताया है। नानकजी ने यहाँ तक कहा– सो क्यों मंदा आखिए जित जनै राजन : अर्थात् महान प्रतापी राजाओं को जन्म देने वाली स्त्री जाति को नीच कहना महापाप है। उस जमाने में वेद शास्त्र आदि पढ़ने तथा हवन आदि में शामिल होने की औरतों को मनाही थी। पर नानक जी ने यह फरमाकर कि सुन मण्डल इक जोगी बैसे, नारी न पुरखु कहहू कोई, जैसे अमर संदेश दिया कि ईश्वर की ज्योति, जो प्रत्येक प्राणी में विद्यमान है उसे नारी कहा जा सकता है न

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

पुरूष। वह परमात्मा का ही अंश है। गुरूनानक ने तो यहाँ तक घोषणा कर दी कि ईश्वर की दरगाह में केवल वही व्यक्ति सम्मान – सत्कार करते है।

जित मुख सदा सालाहीऐ भागा रती चार।
नानक ते मुख उजलै तितु सर्च दरबार।

महिलाओं के हक सम्मान और आजादी की जो क्रांतिकारी मिशाल गुरूनानक ने जलाई उसके बाद के गुरूओं ने अपने आंचल की ओट दी और कभी बुझने न दिया। उस वक्त की अनेक सामाजिक बुराइयों में प्रमुख थी सतीप्रथा और विधवा जीवन के साथ जुड़ा सामाजिक लांछन।

तीसरे गुरू श्री अमरदास ने उस दोनो के खिलाफ आवाज बुलंद की। उन्होंने फरमाया कि पतिव्रता स्त्री होने का अर्थ यह नहीं कि पत्नी पति के साथ जल मरे। सच्ची पतिव्रता कही है जो विरह को सहे। गुरू अमरदासजी ने अनेक विधवाओं को अपने हाथों से विवाह करवाकर उन्हें उपेक्षा तथा अपमान की जिंदगी से बाहर निकाला और उनका सामाजिक पुनर्वास किया। यही नहीं पंजाब में तथा पंजाब से बाहर धर्म के प्रचार के लिए गुरू अमरदास ने जो धार्मिक पीठें स्थापित की उनमें कई पीठों पर महिलाओं को नियुक्त करके उन्हें मिशनरी की एक सर्दथा नीवन तथा उच्च सामाजिक – अध्यामिक सम्मानवाली भूमिका प्रदान की। इसी तरह सिक्ख इतिहास में जिक्र आता है कि छठे गुरू हरगोविंदजी से एक बार गुजरात के जाने – माने सूफी दरवेश शाह दोलाँ ने पूछा कि औरत क्या है? इस पर गुरूजी ने जवाब दिया औरत ईमान है।

निष्कर्ष :–

मानव जाति का अस्तित्व नारी के बिना होना असंभव ही नहीं बल्कि कल्पना के परे से दूर है। मानव जाति के जीवन का अस्तित्व पूर्ण रूप से नारी और पुरूष की समान योगदान से अब तक परिपूर्ण है अन्यथा एक के बिना भी जीवन का अस्तित्व नामुनकिन है। धर्मों में चाहे कितनी भी नारियों की उपेक्षित स्थिति बताई गई हो परन्तु सच्चाई तो यही है कि मानव जीवन की विकास के लिए नारी ही उत्तरदायी है अर्थात मानव जीवन के संपूर्णता एवं अस्तित्व को बनाए रखने हेतु नारी की सर्वोच्च स्थान है। नारी चाहे स्वतंत्र हो या पराधीन परन्तु मानव के अस्तित्व को बनाए रखने हेतु जितना पुरूष का उत्तरदायित्व है उससे बढ़कर नारी का उच्च और सराहनीय योगदान है। अतः पुरूष और नारी एक – दूसरे के पूरक है एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती यही एक मात्र सच्चाई है जो मानव जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने में महत्वपूर्ण और अटूट कड़ी है।

एक ओर स्त्री की अस्मिता से सरोकार रखने वाले स्वतंत्रता, शिक्षा, समानता एवं अधिकारों के बुनियादी सवाल है तो दूसरी ओर स्त्री को मात्र भोग्या, बच्चे जनने वाली उपकरण मात्र माने जाने वाले धार्मिक सामाजिक संस्कार, विधान, प्रथाएं और अंधविश्वास। विडम्बना यह कि पुरूष के वर्चस्व को स्थापित कर स्त्री की मर्यादा को अपदस्थ करने वाले संस्कार रीति – रिवाज और प्रथाओं को अगली पीढ़ि तक संवाहित करने वाली अधिकांशतः स्त्रियां ही होती है जो अपने अज्ञान व अशिक्षा के फलस्वरूप उन संस्कारों को अपना धर्म समझकर स्वयं तो पालन करती है, अपनी बेटियों में बचपन में उन्हीं संस्कारों को परोसती है। जिसे समाज विज्ञान की भाषा में समाजीकरण कहा जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. तिवारी, शशि "बौद्धिक अध्ययन" न्यू भारतीय कल कार्पोरेशन दुकान नं, 18 द्वितीय तल 5574 ए चौधरी काशीराम मार्केट दुर्गा काम्लेक्स न्यू चन्दावल दिल्ली – 2024
2. मल्ल, सागर "जैन , बौद्ध और गीता का समाज अध्ययन", कला प्रकाशन बी ए–1 न्य सांकेत कालोनी, बीएच वाराणसी – 1998
3. मोहन,नरेन्द्र "धर्म और साम्प्रदायिकता" प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड नई दिल्ली – 1996
4. जाटव, डी. आर. "सामाजिक एवं मानववादी विचारक" नेशनल पब्लिशिंग हाउस जयपुर, नई दिल्ली – 2000
5. शर्मा, गीतेश "धर्म के नाम पर" राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1वी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली – 2000
6. सिंह, जगजीत "सरल गुरू ग्रंथ साहित्य" प्रकाशन विद्या विहार 1685 कुचा दखनीराय, दरियागंज नई दिल्ली – 1989
7. तिवारी, शंकर एवं जोशी, अनंत "दहा शीख गुरूजी व सुवर्ण" पंजाब प्रकाशन शंकर अनंत जोशी C/O जी एस अगाशे C–6 116, लारेंस गेड नई दिल्ली – 1989
8. कुमारी, किरण "वैदिक साहित्य और संस्कृति" प्रकाशन : न्यू भारतीय बुक कार्पो. 5574 ए.चौ. काशीराम मार्केट दुर्गा काम्पेलेक्स, न्यू चन्दावल, दिल्ली – 2001
9. लाड, अशोक कुमार "भारतीय दर्शन में मोक्ष चिंतन" प्रकाशन मध्यप्रेदश ग्रंथ अकादमी, 97–मालवीय नगर, भेपाल–3
10. कौसल्यायन, भदंतआनंद "बौद्ध धर्म का सार" हिन्दी अनुवादक एवं प्रकाशन डॉ. मुंशीलाल गौतम अध्यक्ष, सिद्धार्थ गौतम शिक्षण व संस्कृति समिति, धनसारी, अलीगढ़ – 2001